विश्व डाऊन सिंड्रोम दिवस

डाऊन सिंड्रोम यह एक अनुवंशिक परिस्थिती होकर इसमे शारिरिक एवंम मानसिक विकार क्रामोसोम 21 अतिरीक्त निर्माण के कारण जन्मतः होते है ।

लक्षण: यह विकार से ग्रासित बच्चो एंव बुजुर्गोमे उनके चेहरे पर दिखाई देते है। डाऊन सिंड्रोम हुए लोगों मे उेसे जैसे ही लक्षण दिखाई दे यह जरुरी नही सर्वसामान्य रुप से पाए जानेवाले लक्षण इसप्रकार है

- चपटा मुख
- उँचाई कम
- छोटा सिर
- छोटा / ठिंगना नाक
- बाहर की दिशा मे बढी जिव्हा
- आँखोमे पलको के उपर अत्याधिक वृध्दी (फुली पलके)
- अप्राकृतिक आकार के छोटे कान
- कमजोर नसें
- आडे छोटे हाथपंजे पर एक हस्तरेषा
- तुलनात्मक दृष्टी से छोटी अंगुलियाँ/ठिंगणी अंगुलियाँ व हाथ पैर
- अतिरिक्त अस्थिरता
- नेत्रों के रंगीत अवयवों पर सफेंद डाग जिन्हे ब्रशफिल्ड कहते है

धोखे की संभवनायें-

कुछ पालकोंको अपनी संतान मे डाऊन सिंड्रोम दोष होने की संभवनाये रहती है जिसके निम्नलिखित कारण हो सकते है ।

अत्याधिक उम्र मे गर्भावस्था अधिक उम्र मे गर्भावस्था मे होने वाली महिलाओंकी संतान मे डाऊन सिंड्रोम का धोखा हो सकता है , क्यों की पुराने अंडाशय मे क्रामोसोम के अयोग्य विभाजन होने की संभावना अधिक रहती है ।35 वर्ष से अधिक उम्र की गर्भवती महिलाओं मे डाऊन सिंड्रोम ग्रस्त संतान की संभावना अधिक रहती है साथ ही साथ 35 वर्ष से कम उम्र की महिलाओंमे निरंतर पुरुष उत्पत्ती से भी यह संभावना बढ सकती है।

आनुवंशिक स्थानांतरण के वाहक के कारण डाऊन सिंड्रोम की संभावना रहती है । महिला अथवा पुरुष दोनों मे कोई अनुवंशिक स्थानांतरण के गुणधर्म का धारक रह सकता है । जिसके चलते संतान पर भी डाऊन सिंड्रोम का परिणाम दिखाई देता है ।

किसी संतान को डाऊन सिंड्रोम होना पालकों को डाऊन सिंड्रोम होने से तथापि पालकोंमे स्थानांतरण के गुणधर्म दिखाई देने से अन्य संतान भी ग्रस्त हो सकती है ।अनुवंशिक समुपदेशक पालकों को इस संदर्भ मे मार्गदर्शन कर सकते है तथापि धोखे से सहायता कर सकते है ।

कुछ उलझने -

- जन्म से ही हृदयविकार
- श्वास नलिका के उपरी हिस्से मे संक्रमण
- खर्राटे अथवा नींद मे गले के स्नायू शिथिल होकर श्वासनलिका बंद होना, रुकावट होना
- जठर आतडियों मे रुकावटे
- थायरॉईड ग्रंथी के कार्य मे रुकावटे
- प्रतिकारात्मक शक्ती का कार्य अव्यवस्थित होना
- रक्त का कर्करोग
- रीढ की हडड्ी की समस्याऐं

निदान-

सिरम TSH यह थायरॉईड ग्रंथी कार्य मे सावधान की प्राथमिक जाँच की जाती है । पालकों की जाँच मे गर्भवती महिला के गर्भ मे क्रोमोसोम की कमी धोखा दिखाई देने पर निदान सुनिश्चत करने हेतु सायटोजेनेटिक ॲनालिसीस किया जाता है ।गर्भधारणा के पश्चात 10 से 12 सप्ताह के बाद गर्भ के जन्म सप्ताह मे कोरीॲनिक विलस के नमुने की जाँच की जाती है, जो की गर्भजल की होती है अथवा गर्भधारणा के 15 वे सप्ताह मे ॲग्नीओसेंटेसीस (गर्भ से पानी निकालना) जाँच की जाती है ।

क्रोमोसोम अधिक पेशी केंद्र मे उपस्थित होने की जाँच ट्रायसेमी टेस्ट पॉलीमरेस चेन रिॲक्शन (PCR) अथवा फ्लोरेन्स इन सीटू हायब्रीडायझेशन (FISH) टेक्नीक्स का उपयोग कर की जाने पर कॅरीओ टाईप ॲनालिसीस मे तुलना की जाती है ।ऐसा पाया जाता है की ऐसी तुरंत जाँच यह अधिकतर गर्भवती स्त्रियोंमे क्रोमोझोमल ॲबनॉर्मलीटीज (विकार) ढूँढने मे सफलता नही मिलती ।

नियंत्रण उपचार पध्दती-

सिरम टीएसएच यह प्राथमिक जाँच होकर इस अवस्था मे हायपोथॉरिडीसम हुए रोगियोमे थायरॉइडस संक्रमण संप्रेरक बदलने की क्षमता की जाँच की जाती है ।

उपचार किए जाने के पश्चात अथवा मात्रा मे परिवर्तन करने पर 4 से 8 सप्ताह बाद TSH जाँच की जानी चाहिए ।

अत्यावश्यक प्रमाण मे मात्रा दिए जाने के पश्चात 6 महिनों क पश्चात TSH जाँच करनी चाहिए । पश्चात 12 वे महिने मे (समयअनुसार अधिकबार) जाँच करनी चाहिए ।

लीव्होथायरॉक्झीन लेनेवाले रोगियों मे TSH जाँच दवा प्रारंभ करने से 4 से 8 सप्ताह दवा के साथ करनी चाहिए ।

हायपोथारॉडीसम युक्त गर्भवती महिला शीघ्र ही सिरम TSH जाँच करनी चाहिए ।

जाँच-

- धोखा होने की संभावना वाले पालको द्वारा गर्भ के क्रोमोझोनल विकार बालक के जन्म लेने पुर्व ही करना चाहिए ।
- गर्भजल का नमूना - गर्भजल की सायटोजेविक विकार की जाँच करने की दृष्टी से की जानेवाली जन्मपूर्व जॉच हो तो भी अम्नीओसेंटेसीस की कमी जानी जा सकती है ।
- अम्नीओसेंटेसीस का उपचार
- डाऊन सिंड्रोम की जन्म पुर्व एवं जन्मपश्चात निदान क्रोमोसोम ॲनालायसिस

उपचार पध्दती-

डाऊन सिंड्रोम पर दवा ईलाज का उददेश सामने रखकर उपयुक्त पध्दती से किया जाता है ।हृदयरोग, सुनाई कम देना, आँखोमे विकार वैसेही सिलिॲक रोग (छोटी आंत की हानी)अथवा थायरॉइड मोटापा प्रतिरोध हडड्ीयोंका विकार पर नियमित ध्यान देना अन्य चिकित्सिकीय उपचार नियमित रुप से करना चाहिए ।यह डाऊन सिंड्रोम ग्रस्त व्यक्ती को अत्यावश्यक है जैसे मधुमेह, रक्तकर्करोग, निद्रानाश खर्राटे गले कुल्हो का रोग योग्य समुपदेशन एवं साधन सामग्री की उपलब्धता होनेपर रोगी को स्वतंत्र रुप से जीवन मापन करना, अपने कार्य करना अन्यों से संपर्क स्थापित करना संभव होता है।

दातों के ईलाज की आवश्यकता आंतरिक स्नायू मे दर्द होने पर प्रोफेलेक्सिस इस प्रतिजैविक की शिफारिश डाऊन सिंड्रोम हुए जन्मतः हृदयरोग है जिनको दांत के आंतरिक स्नायू का दर्द होने पर विपरित परिणाम हो सकता है ।यानि

की काम्पलक्स सायनोटिक हार्ट रोग अथवा शल्यक्रिया के पश्चात दर्द मे वृध्दी होने पर अन्य शल्यक्रिया की जाती है । दातों के आंतरिक रोग निर्माण हुए जन्मत : हृदयरोगी, श्रवण दोषी अथवा अन्य रोगी जैसे खर्राटे जैसे रोगी पर शल्यक्रिया आवश्यक होती है सुनाई दोष पर की गई शल्यक्रिया न्यूमो इस्टाचेन टयूब, टॉन्सीलेक्टामी (टॉन्सील ग्रंथी एवं ॲडीनोडीकटॉमी (ॲडीनोईड निकालना) का समावेश होता है।

Reference: Micromedex's Care Notes System Online 2.0